Course -- B.A, Education,part --3

Paper--- 7th, Educational Thought and practice
&Adult Education

Prepared by - Dr Meena Kumari

Topic-- concept of Adult Education

वयस्क शिक्षा की अवधारणा

(1) प्रस्तावना --- भारत एक प्रजातांत्रिक देश है ।प्रजातांत्रिक देश में नागरिकों को अपने कर्तव्य अधिकारों का ध्यान कराने के लिए शिक्षित होना आवश्यक है ।शिक्षा के तो बहुत से महत्वपूर्ण पक्ष है और शिक्षा जीवन के लिए अवश्यंभावी है। आज के युग में शिक्षा के बिना जीवन की कल्पना करना भी मुश्किल है ।आज जीवन बहुत सारे जटिलताओं से भरा हुआ है और इन जटिलताओं का सामना करने के लिए भी शिक्षित होना आवश्यक है। अतः शिक्षा के उपयोग तथा महत्व को देखते हुए ऐसे व्यक्ति जो अशिक्षित हो गए हैं और जिनकी आयु अधिक है उन को साक्षर बनाने का एक प्रयास का नाम वयस्क शिक्षा है।
होते
(2) वयस्क शिक्षा का अर्थ -- वयस्क शिक्षा को प्रौढ़ शिक्षा के नाम से भी जानते हैं।इस शिक्षा का अर्थ ऐसे व्यक्ति को साक्षर करना है जिसका उम्र अधिक हो गया हो तथा जिसकी बुद्धि परिपक्व हो गई हो ।ऐसे व्यक्ति को प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत शामिल नहीं किया जा सकता है। अतः इनके लिए एक अलग से व्यवस्था की गई जिससे प्रौढ़ शिक्षा के नाम से जाना जाता है!कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएं निम्न वत है ----

महात्मा गांधी के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा जीवन के लिए,जीवन के द्वारा , जीवन भर चलने वाली शिक्षा है।

अबुल कलाम आजाद के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल साक्षर बनाना नहीं है बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करना है जो आधुनिक ,प्रजातांत्रिक तथा सामाजिक क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग ले सकें ।

शिक्षा आयोग (1964- 66)कोठारी आयोग के अनुसार प्रजातंत्र में प्रौढ़ शिक्षा का कार्य प्रत्येक नागरिक को उस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का एक अवसर प्रदान करता है जिस शिक्षा को वह चाहता हो तो उसकी व्यक्तिगत समृद्धि ,व्यवसायिक उन्नति तथा सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए उसे मिलनी चाहिए।

हाउले के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा का संबंध किसी भी व्यक्ति के व्यवसाय ,व्यक्तिगत एवं नागरिक जीवन से है।

मोरगन के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा द्वारा किसी नई बात को सीखने के लिए एक जानबूझकर किया गया प्रयत्न है।

ब्रायसन के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा सभी अवसरों और सभी परिस्थितियों पर सीखी जाने वाली प्रक्रिया है।

मुखर्जी के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा में सभी औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षाएं सम्मिलित है।

सैदायान के अनुसार शिक्षा में राजनीतिक, नागरिक तथा नैतिक शिक्षा सम्मिलित है।
भारत सरकार के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा के संबंध में निम्नलिखित बातें बताई गई है
निरंतर प्रौढ़ों में साक्षरता को फैलाना ।

#साक्षरता की शिक्षा के अभाव में जनता के मन को शिक्षित करना ।

प्रौढ़ों में अपने कर्तव्यों तथा अधिकारों के प्रति सचेत होने का ज्ञान उत्पन्न करना ।

सभी परीभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रौढ़ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल निरक्षर को साक्षर बनाना नहीं बल्कि उनकी आधारभूत समस्याओं का समाधान करना होना चाहिए ।

(3) प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य, लक्ष्य तथा महत्व :---

१) प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य -- प्रौढ़ शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्न वत है :-----
वयस्कों का शारीरिक विकास करना उचित ज्ञान देकर तथा स्वास्थ के प्रति जागरूकता का विकास करना।

प्रौढ़ों के मानसिक विकास शिक्षा की व्यवस्था द्वारा करना तथा पारिवारिक तथा आर्थिक स्थितियों को बताना। उनके बौद्धिक विकास में सहायता प्रदान करना।

सामाजिक कुशलताओं का विकास करना ताकि वह अपने साथियों, संबंधियों तथा मित्रों के साथ मिलकर रहना सीखें और अपने जीवन को प्रगति के रास्ते पर ले जाएं!

व्यवसायिक उन्नति के विकास के लिए प्रौढ़ शिक्षा द्वारा तकनीकी कौशल तथा कृषि एवं उद्योग संबंधित प्रशिक्षण की व्यवस्था करना है।

संस्कृति विकास के लिए समाज शिक्षा प्रौढ़ों को संगीत, नृत्य तथा भाषणों द्वारा प्राचीन एवं प्रचलित सांस्कृतिक क्रियाओं का परिचय कराती है।

सामाजिक दृढ़ता का विकास करना। इसके तहत विभिन्न भाषा, धार्मिक संप्रदाय, नागरिक एवं ग्रामीण लोगों को शिक्षित और अशिक्षित मजदूरों ,नौजवानों तथा बूढ़ों में व्यक्तिवाद तथा पृथकता की भावना को कम करना।
सबके लिए एक समान
संस्कृति के निर्माण करने में सहायता प्रदान करना।

राष्ट्रीय साधनों का संरक्षण तथा विकास करने के लिए प्रोत्साहित करना ।समाज शिक्षा ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि उद्योग के विकास में सहायता प्रदान करने के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करना ताकि वे राष्ट्रीय साधनों की सुरक्षा में निश्चित योगदान दे सकें।

प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से सामाजिक विचारधारा विकसित करना ताकि प्रत्येक व्यक्ति समाज में योगदान कर सके। सामाजिक विचारधारा में सामाजिक गुणों का निर्माण करना है जिससे उनमें सहयोग, सहनशीलता,राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति का विकास करना।

प्रौढ़ शिक्षा के द्वारा भक्ति में सहकारी समुदाय तथा संस्थाओं का निर्माण करने करने की योग्यता हासिल करने में सहायता प्रदान करना बच्चे प्रसन्न तथा सामाजिक प्रगति में समन्वय स्थापित करती है यह सहकारी संघ निर्माण में सहायता देती है जो आर्थिक एवं समस्याओं का सहयोग देते हैं।

२)महत्व --- भारत गांव का देश है ।जब तक गांव के लोग साक्षर नहीं होंगे ,तब तक भारत पिछड़ा ही रहेगा। शिक्षा की आवश्यकताओं को देखते हुए ग्रामीण जनता को अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना तथा संपूर्ण क्रांति पैदा करना ही प्रौढ़ शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है। किसी भी देश की राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए शिक्षा का विशेष महत्व है अभी भी अभी भी बहुत सारे अधिक उम्र के ,व्यक्ति निरक्षर ही है ।अतः प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता का अध्ययन व्यक्तिगत ,सामाजिक तथा राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। व्यक्तियों की आर्थिक ,पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जरूरत भी, प्रौढ़ शिक्षा के महत्व को बढ़ा देती है। सामाजिक कुशलता संबंधित जानकारी तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से जागरूक बनाना भी प्रौढ़ शिक्षा का महत्व है। प्रौढ़ शिक्षा का उपयोग मानसिक विकास तथा आत्म विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है । प्रौढ़ शिक्षा के द्वारा नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास तथा चारित्रिक विकास भी किया जाता है जो इसके महत्व को दर्शाता है।